ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 377-379

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

उत्तर–उपनिवेशवाद और एडवर्ड एम सेड –समाजशास्त्रीय विश्लेषण

1. रवि कुमार मिश्र 2. अरविन्द कुमार मिश्र

1. एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, नागरिक पी.जी. कॉलेज, जंघई–जौनपुर (उ0प्र0),भारत
2. असिस्टेण्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज (उ0प्र0),भारत

Received- 21.07.2020, Revised- 24.07.2020, Accepted - 26.07.2020 E-mail: - arvind250381@gmail.com

सारांश : ***समकालीन परिदृश्य को अगर समझने का प्रयास किया जाय तो यह कहा जा सकता है कि औपनिवेशिक शासन का दौर अब समाप्त हो चुका है। विश्व के अधिकांष देश स्वतंत्र हैं, संप्रभु राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान के साथ हैं। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के दौर में जो दो ध्रुवों में विश्व विभाजित था, शीतयुद्ध का दौर था अब समाप्त हो चुका है। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में अब अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका और हस्तक्षेप बढ गया है। एक प्रश्न जिस पर बहुत ही ज्यादा चर्चा होती है कि औपनिवेशिक शासन से मुक्त हुए देशों की क्या स्थिति है, उनकी प्रगति कितनी है, अन्य राष्ट्रों की तुलना में उनका स्थान कैसा है आदि आदि। इससे हटकर एक बात यह भी उभरती है कि इन राष्ट्रों की संस्कृति और अस्मिता का निर्वचन कैसे किया जाये। इसका कारण यह है कि इन राष्ट्रों के बारे में शासक देशों का निर्वचन कैसा रहा है, उन्हें स्वीकार किया जाये अथवा उसे अस्वीकार किया जाये। इस में यह भी एक आयाम है कि उनका निर्वचन कितना तटस्थ और वास्तविक है। यही सब उत्तर–उपनिवेशवाद की पृष्ठभूमि गढता है। इस उत्तर उपनिवेशवादी चिंतन के प्रमुख हस्ताक्षर एडवर्ड सेड हैं। उनके अतिरिक्त जिन लोगों ने इस पर गंभीरता से चर्चा की है वे हैं होमी भाभा, गायत्री चकवर्ती स्पीवाक, अर्जुन एप्पादुराई, एशिल मैम्बे, गौरी विश्वनाथ आदि।[1] गौरी विश्वनाथ ने यह बताया है कि औपनिवेशिक भारत में अंग्रेजी साहित्य और संस्कृति का प्रभाव ज्यादा रहा है। 1989 में प्रकाशित उनकी कृति मास्कस ऑफ कन्कवेस्ट काफी प्रसिद्ध रही है। उत्तर–उपनिवेशवाद के बारे में एक विशिष्टता यह भी है कि इसमें विविध अनुशासनों का समावेश है। इनमें साहित्य, मानवशास्त्र, इतिहास प्रमुख अनुशासन हैं। इन अनुशासनों की विविधता से एक ऐसा साझापन नहीं विकसित हो पा रहा है जो ज्यादातर पहलूओं को स्वयं में समाहित किये हुए है। इसके साथ–साथ विषय का केन्द्रण भी नहीं हो पा रहा है। यह आलेख एडवर्ड सेड के विचारों पर केन्द्रित है।***

कुंजीभूत शब्द– अर्थव्यवस्था, अन्तरराष्ट्रीय, संस्थाओं, हस्तक्षेप, औपनिवेशिक, संस्कृति, अस्मिता, निर्वचन ।

एडवर्ड सेड उत्तर उपनिवेशवादी अपनी चर्चा में अपने प्राच्यवाद या ओरियेंटलिज्म की अवधारणा के लिए प्रसिद्ध हैं। उन पर विविध विचारकों देरिदा, शॉपेनहॉवर, ग्राम्शी आदि का प्रभाव रहा है। उन्होंने कई प्रसिद्ध कृतियां दी हैं–बिगनिंग्स : इंटेशन एण्ड मेथड (1974), द वर्ड : द टेक्सट एण्ड द क्रिटिक (1983), नेशनलिज्म, कोलोनियलिज्म एण्ड लिटरेचर : यीट्स एण्ड डिकोलोनाइजेशन (1988), कल्चर एण्ड इम्पेरियलिज्म (1993) आदि। इसके साथ–साथ द क्वेशचन ऑफ पेलिस्टाइन (1979), कवरिंग इस्लाम (1981), आफ्टर द लास्ट स्काई (1986), ब्लेमिंग द विक्टीम्स (1988)[2]। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं – ओरियेंटलिज्म (1978)। एडवर्ड सेड की छवि एक बहुआयामी व्यक्तित्व की रही है। वह साहित्यकार और सक्रिय व्यक्तित्व दोनों ही रहे हैं।

एक बात सामान्य रूप से देखी जा सकती है कि औपनिवेशिक शासन से जो राष्ट्र प्रभावित रहे हैं वे औपनिवेशिक शासन से पूर्व भी अपनी पहचान रखते थे। उनके पास अपनी संस्कृति, भाषा और अर्थव्यवस्था रही थी। ये राष्ट्र औद्योगिक राष्ट्र नहीं थे। उनके पास अपनी कृषि आधारित अर्थव्यवस्था रही थी। अपनी समस्याओं को वह सुलझाते रहे थे। इस सब के साथ साथ उनमें अपनी संस्कृति के प्रति एक संतुष्टि और स्वाभिमान भी रहा था। उत्तर उपनिवेशवाद सर्वप्रथम यह तथ्य प्रकाष में लाता है कि आधुनिकता को लेकर एक विशेष तरह का उत्साह स्थापित किया गया। यह स्पष्ट किया गया कि जो भी समाज आधुनिक नहीं हैं उन्हें इन समाजों जैसा होना चाहिए। जो भी देश इन विकसित आधुनिक देशों की तरह नहीं हैं उन्हें विकसित और आधुनिक नहीं माना जा सकता है। दूसरा तथ्य यह स्थापित किया गया कि विकास का जो प्रारूप हो सकता है वह पश्चिमी देशों के अनुरूप ही हो सकता है। इसके साथ साथ चिकित्सा पद्धति, विज्ञान, शिक्षा के तरीके भी पश्चिमी देशों के प्रारूप पर ही आधारित हो सकते हैं। समाजशास्त्र के अधिकृत हस्ताक्षरों ने भी ऐसा ही विचार व्यक्त किया है। दुर्खीम के यांत्रिक एकता से सावयवी एकता वाला समाज, स्पेंसर का सैनिक

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

और औद्योगिक समाज, मार्क्स का साम्यवादी और समाजवादी समाज और मैक्स वेबर का तार्किकता पर आधारित आधुनिक समाज की शब्दावली– इसी तथ्य को प्रकाश में लाते हैं कि समाज में परिवर्तन ऐसे ही होंगें। हम इसके अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार के समाज के परिवर्तन की कल्पना नहीं कर सकते हैं। उत्तर–उपनिवेशवाद इसे स्वीकार करने की जगह इसे चुनौती देता है।

प्राच्यविद्या या ओरियंटल स्टडीज की लोकप्रिय शब्दावली यह स्पष्ट करती है कि जिन देशों में औपनिवेशिक शासन रहा है वहां की संस्कृति का अध्ययन स्वाभाविक रूप से लोगों द्वारा किया गया है। इसका उद्देश्य उस संस्कृति को समझना और जानना रहा है। यह अध्ययन यात्रियों, क्षेत्र विशेष में स्थापित पदाधिकारियों, पत्रकारों, साहित्यकारों, अनुसंधानकर्ताओं द्वारा किया जाता रहा है। इस में सहज स्वाभाविक जिज्ञासा रही है। इस तरह के अध्ययन और लेखन को लोगों के द्वारा काफी सराहा गया है। ये ओरियेंटल स्टडीज है। एडवर्ड सेड इस तरह के अध्ययन में तटस्थता का अभाव पाते हैं। उन्हें यह लगता है कि कहीं न कहीं यह अध्ययन समाज विशेष का नकारात्मक चित्रण और उसे स्थापित करने का प्रयास है। एडवर्ड सेड का यह कहना है कि ओरियेंटलिज्म एक ऐसा विमर्श है जो पूर्व और पश्चिम के मध्य एक विभेद उत्पन्न करता है जिसमें गत्यात्मक और सकारात्मक मूल्यों को पश्चिमी सभ्यता से सम्बद्ध किया गया है।[4] इस तरह के लेखन में पूर्वी समाज के सम्बन्ध में विशेष तरह के सुदृढीकरण या पूर्वाग्रह को स्थान दिया गया है।

एडवर्ड सेड इस ओरियेंटलिज्म की अवधारणा को अस्वीकार करते हैं। सेड की प्रमुख आपत्ति इस बात को लेकर है कि इस तरह के अध्ययन वास्तव में उस समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। सम्बन्धित समाज के सम्बन्ध में जो ज्ञान है वह वास्तविक है, ऐसा भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। एडवर्ड सेड का यह कहना है कि जिन पश्चिमी विचारकों ने ओरियेंटलिज्म के अन्तर्गत अपने विचार को व्यक्त किया है और यह बताया है कि वे ओरियेंटलिस्ट हैं, उसे सेड स्वीकार नहीं करते हैं। पश्चिमी समाज के चिंतक एशिया और विशेषकर मध्य पूर्व को जिस नरेटिव या विचारधारा से आकलन करते हैं वह नरेटिव या विचारधारा सम्बन्धित समाज का सही प्रतिनिधित्व नहीं करती है। अरब इस्लाम से सम्बन्धित लेखन में पूर्वाग्रह है। इस पूर्वाग्रह में यूरोपीय आग्रह स्वाभाविक रूप से देखा जा सकता है। इसके साथ–साथ यह मानना कि इन समाजों में आधुनिकता नहीं आयी अथवा ज्ञानोदय नहीं हुआ है। इस धारणा को भी मानने से एडवर्ड सेड ने इनकार किया है। इन समाजों को सामान्य तौर पर पिछड़ा के रूप में इस तरह के साहित्य में अभिव्यक्त किया गया है। सेड की आपत्ति इन बातों को लेकर ज्यादा है।

एडवर्ड सेड यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि ओरियेंटलिज्म के नाम पर जो लिखा गया है उसमें सम्बन्धित समाज को सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और अन्य आयामों में सही ढंग से नहीं समझा गया है। इस तरह के लेखन में सेड ने पूर्वाग्रह को रेखांकित किया है। समाजशास्त्र के विद्यार्थी के रूप में हम इस तथ्य से परिचित हैं कि किसी भी संस्कृति को उससे अलग परिवेश में समझना उचित नहीं है। हमें सांस्कृतिक सापेक्षवाद की धारणा का उपयोग करना चाहिए और संस्कृति विशेष के विविध पहलुओं को उस संस्कृति के सापेक्ष समझना चाहिए। कार्ल मैनहीम ने भी इस तरह के संज्ञानात्मक सापेक्षवाद और नैतिक सापेक्षवाद की चर्चा की है।[5] उनका यह मानना है कि इस तरह के प्रश्नों पर व्यक्ति और समाज को ध्यान में रखकर ही विचार करना चाहिए। अगर हम सेड के दृष्टिकोण से देखें तो इसके विपरीत ओरियेंटलिज्म में यूरोप केन्द्रित चिंतन का प्रभाव है। इस कारण सम्बन्धित समाज के विविध आयामों को सही ढंग से नहीं समझा जा सका है। ऐसे में इस तरह की रचनाओं के माध्यम से समाज को समझने की बात कही जाये और उसे उसका प्रतिनिधित्व माना जाये तो यह उचित नहीं है।

ओरियेंटलिज्म में मिथकीय पक्षों को ज्यादा महत्व दिया गया है। इससे उस समाज के प्रति रहस्यात्मकता, अज्ञानता और भय की स्थिति उत्पन्न की गयी है। इस तरह के लेखन रहस्य, सनसनी और रोमांच उत्पन्न करने वाले हैं। दूसरे समाजों में यह सामान्य रूप से समझा जाता है कि ये समाज स्थिर हैं और इसी तरह के मिथकों से संचालित हो रहे हैं। इस समाज में भी गतिशीलता है, तीव्र परिवर्तन है ऐसा सामान्य रूप से नहीं समझा जाता है। समाजशास्त्र के विद्यार्थी के रूप में हम यह समझ सकते हैं कि मिथक और प्रतीक की दुनिया का अपना महत्व है। लेविस्ट्रास ने तो मिथक पर ही अपना कार्य किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि मिथकों के कारण किसी समाज को पिछड़ा या आधुनिक नहीं कहा जा सकता है। इसका सम्बन्ध हमारे मस्तिष्क की संरचना से है।[6] उन्होंने संरचनावादी नजरिये से मिथक का अध्ययन प्रस्तुत किया है। भारत की प्रतीक विद्या को भी अगर हम नहीं समझेंगे, तो भारतीय संस्कृति को समझा नहीं जा सकता है। इस सम्बन्ध में जनार्दन मिश्र, देवदत्त पटनायक7 आदि के अध्ययन महत्वपूर्ण हैं। विविध अध्ययनों से हम यह समझ सकते हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

किसी भी अध्ययन का उद्देश्य उस अध्ययन की प्रासंगिकता और उपादेयता को निर्धारित करता है। इस तरह के ओरियेंटल स्टडीज के उद्देश्य को लेकर एडवर्ड सेड का यह मानना है कि इस तरह के अध्ययन साम्राज्यवादी देशों के हितों को ध्यान में रखकर किये गये हैं। उन देशों का आधिपत्य और प्रभाव बरकरार रखना ही इस तरह के अध्ययन का उददेश्य होता है। एडवर्ड सेड पूर्व सम्बन्धी पश्चिम के निर्माण साधनों और संकल्पनाओं पर कठोर प्रहार करते हैं। पूर्व को पश्चिम के तर्क विवेक– विज्ञान, वर्चस्व, सभ्यता, मानवीयता की तुलना में अतार्किक बहुलतापरक उलझाव वाला काममोहित या पाश्ववृति ग्रस्त, हीनता का प्रतिशोध लेने के भाव वाला, बर्बर और हिंसक मानने की पश्चिमी मानसिकता से वे हमें परिचित कराते हैं।[8] यहां हम स्वाभाविक रूप से ज्ञान और शक्ति के विमर्श को देख सकते हैं जो कि मिशेल फूको द्वारा स्थापित किया गया है। फूको यह मानते हैं कि ज्ञान और शक्ति घनिष्ठता से एक–दूसरे से सम्बद्ध हैं और नये तरह की शक्ति का उदय नये तरह के ज्ञान के स्वरूप से सम्बद्ध है।[9] इसके बावजूद यह सही है कि उनका और एडवर्ड सेड का संदर्भ अलग–अलग है। एडवर्ड सेड का यह मानना है कि इस तरह के अध्ययन स्वाभाविक अध्ययन नहीं हैं। इसके पीछे निहित उद्देश्य है, हमें यह समझना ही होगा।

एडवर्ड सेड ने बाद में प्रकाशित अपनी अन्य कृति कल्चर एण्ड इम्पीरियलिज्म (1993) में यह भी बताया कि यूरोप की अत्यन्त लोकप्रिय रोमांचकारी कथाओं में जो साहस, पराक्रम, नये द्वीप को बसाना आदि का जो वर्णन है वह साम्राज्यवादी चिंतन ही है। इस साम्राज्यवादी चिंतन का प्रभाव इन कथाओं और इसकी शिक्षाओं में है। जैसे– सभ्य बनाना, उनकी जीवनशैली में परिवर्तन लाना इत्यादि। इन कथाओं को जैसे समझा और देखा जाता रहा है उससे वह सहमत नहीं हैं।

इस प्रकार एडवर्ड सेड के लेखन और विशेषकर ओरियेंटलिज्म में यह स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि एक विशेष तरह का स्वार्थ इस तरह के लेखन में है, हमें यह समझना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिमोन मालपस एवं पॉल वेक (2008) द रूटलेज कंपेनियन टू क्रिटिकल थ्यरी, रूटलेज, न्यूयार्क, पृ–135.
2. वही, पृ–249.
3. सिंह, जे.पी. (2002) समाजशास्त्र : अवधारणाएं एवं सिद्धान्त, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, पृ–323–325.
4. पेंग्विन डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी (2006) पेंग्विन, पृ–280.
5. मैकमिलन स्टूडेण्ट इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशियोलॉजी (2003) मैकमिलन पृ–327.
6. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी(2004) ऑक्सफोर्ड, पृ–437.
7. पट्टनायक देवदत्त (2014), इंडियन मायथोलाजी, इनर ट्रेडिशंस, नोयेडा।
8. पी. रवि (2011), उत्तर–औपनिवेशिक विमर्श और हिन्दी कविता, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा, पृ–26.
9. पेंग्विन पूर्व उद्धृत, पृ–153.

*****